Click www.researchjournal.co.in/online/subdetail.html to purchase.

*International Journal of Physical Education*, Vol. 3 No. 1&2 (April & October, 2010) : 94-98

***Article :***

# ch0,M0 d Nk= vkj Nk=kvk dh lek;kt u&{kerk dk v/;;u

ANJU KUMARI, R.P. JAIN, **SAHADEV MANN AND** ARVIND KUMAR

**Accepted :** ***April, 2010***

See end of the article for authors' affiliations

Correspondence to:

**SAHADEV MANN**
Department of Physical Education, C.C.R. (P.G.) College,
MUZAFFARNAGAR (U.P.) INDIA

प्रस्तुत शोध अध्ययन का प्रमुखोद्देश्य चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से सम्बद्ध स्ववित्त पोषित श्री राम कॉलेज, मुजफ्फरनगर के बी0एड0, के छात्र और छात्राओं के समायोजन–क्षमता स्तर का अध्ययन करना था। इसके लिए बी0एड0 के 50 छात्र–छात्राओं का चयन रैण्डम सैम्पलिंग के द्वारा किया गया। आंकडे एकत्रीकरण हेतु ए0के0पी0 सिन्हा व आर0पी0 सिंह कृत एडजेस्टमेण्ट इन्वेन्ट्री फॉर कॉलेज स्टूडेण्ट (ए0आई0सी0एस0) को प्रयुक्त किया गया और निष्कर्ष में पाया गया कि ए–वर्ग उत्कृष्ट प्रकार में कोई विद्यार्थी नहीं, बी–वर्ग अच्छा प्रकार में 16, सी–वर्ग सन्तोषजनक प्रकार में 26, डी–वर्ग असन्तोषजनक प्रकार में 7 व ई–वर्ग अत्यन्त असन्तोषजनक प्रकार में एक छात्रा है।

शिक्षा एक ऐसा पद है जिसका उपयोग प्राचीन काल से होता आ रहा है। जैसे– महाभारत काल, रामायण काल, बौद्ध काल व जैन काल आदि, वैदिक काल में गुरू व शिष्य के बीच ज्ञान की व्यवस्थित प्रक्रिया को शिक्षा के नाम से जाना जाता था। दूसरे शब्दों में कहे तो हम इस प्रकार से कह सकते है कि ज्ञानी एवं अज्ञानी के मध्य मौखिक बोधात्मक संवाद को शिक्षा कहते थे।

इस काल में गुरू अपने सभी शिष्यों को आवश्यक व महत्वपूर्ण समझा जाने वाला ज्ञान कण्ठस्थ कराता था और इसे ही उनकी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य माना जाता था। गुरू का एकमात्र कर्तव्य शिष्य को सूचना मात्र देना था। चूंकि उस समय लेखन विधि, स्याही, कलम व कागज का विकास नहीं हो पाया था अतः ज्ञान वितरण का एकमात्र यही तरीका था। इससे सुस्पष्ट होता है कि शिक्षा बाल केन्द्रित (Child Centred) न होकर ज्ञान केन्द्रित थी।

शिष्य चाहे बालक हो या व्यस्क, सभी को एक ही शिक्षा दी जाती थी और उसे देने का तरीका भी एक ही था और वह था– मौखिक शिक्षा इसका परिणाम यह होता था कि शिष्य का अपेक्षित सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता था। परन्तु आधुनिक काल में शिक्षा का यह अर्थ पूर्णतया समाप्त हो चुका है। आधुनिक शिक्षा में शिक्षा का अर्थ किसी तरह का उपदेश या सूचना देना नहीं होता है, बल्कि यह बालक के सर्वांगीण विकास के लिए एक निरन्तर (Continuous) चलने वाली एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति में निहित क्षमताओं (Abilities) का सही–सही उपयोग विभिन्न सामाजिक–परिस्थितियों में किया जाता है। दूसरे शब्दों में इस प्रकार से कहा जा सकता है कि आजकल शिक्षा से तात्पर्य व्यक्ति में निहित क्षमताओं के विकास से हाता है जिसके परिणाम स्वरूप व्यक्ति समाज में उपयोगी बनता है।

क्रो एवम् क्रो (1954) ने शिक्षा को पारिभाषित करते हुए कहा है

''शिक्षा हमें केवल सूचना व ज्ञान प्रदान करती है बल्कि हमारे और विश्व के अन्य प्राणियों के बीच प्यार व सहानुभूति को बढावा देती है।''

श्री अरविन्द ने शिक्षा को पारिभाषित करते हुए कहा–

''शिक्षा का प्रमुख ध्येय जीवात्मा को विकसित करने में मद्द देकर उसका सर्वश्रेष्ठ बाहर लाना और उसे उदत्त कार्यो के लिए सम्पूर्णतया प्रदान करना है।''

याज्ञवलक्य ने शिक्षा को पारिभाषित करते हुए कहा–

''शिक्षा चरित्र का विकास करती है और आदमी को दुनिया के उपयोग के लायक बनाती है।'' स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा के बारे में अपने विचार इस प्रकार से व्यक्त किये–

''वास्तविक शिक्षा वहीं है जो व्यक्ति को अस्तित्व के लिए संघर्ष करने के लिए तैयार करती है, वह व्यक्ति को समाज सेवा के योग्य बनाती है, उसके चरित्र का विकास करती है और अन्ततः उसे आध्यात्मिक शक्ति और शेर के साहस से अनुप्रमाणित कर देती है। इससे कम सीखाने वाली शिक्षा अनुपयोगी है।

शंकराचार्य ने अपने शिक्षा सम्बन्धित विचार इस प्रकार से व्यक्त किये है– ''शिक्षा का मूल उद्देश्य बच्चों को मोक्ष की प्राप्ति कराना है।''

महात्मा गांधी ने अपने शिक्षा सम्बन्धित विचार इस प्रकार से व्यक्ति किये है –''शिक्षा से मेरा अभिप्राय बच्चें और बड़े के शरीर, मन और आत्मा के सर्वोत्मुखी विकास से है।''

पेस्टालोजी ने शिक्षा को इस प्रकार से पारिभाषित किया है–

''शिक्षा मनुष्य की सहजात शक्तियों का प्राकृतिक, सुव्यवस्थित और प्रगतिशील विकास है।''

ए0एस0एल्टेकर के शिक्षा सम्बन्धित विचार इस प्रकार है–